जीवन का सम्मान करो

अवसर चाहे जो भी हो, संगीत संगीत ही रहता है। आनंद के लिए स्थान मायने नहीं रखता। ऐसा ही कुछ देखने को मिला नई दिल्ली की ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में आयोजित कृष्ण सप्ताह में। सुप्रसिद्ध नृत्यांगना सोनल मानसिंह ने जब एक फिल्मी गीत 'कजरारे-कजरारे' पर नृत्य किया तो मौजूद सभी दर्शक हैरान रह गये। कृष्ण को समर्पित गीतों पर नृत्य करते हुए अचानक जब उन्होंने इस गीत पर नृत्य आरंभ किया तो गैलेरिया में कुछ अलग ही माहौल उत्पन्न हो गया। यूं तो यह गीत आजकल आम सुनने को मिलेगा, परंतु इस तरह के वातावरण में उसके अचानक प्रगट होने में कुछ और ही बात थी। उन्होंने कहा कि मैं इस गीत पर भी नृत्य कर सकती हूं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं अपनी मूल कला को भूल जाऊं। ठीक लिखती हैं वंदना गुप्ता कि खुशी के लिए किसी बहाने के जरूरत नहीं होती। 28 अगस्त के दैनिक जागरण ने इस खबर को छापा है।

tanya Keerti

Release of 'Osho Fragrance'

INDIAN readers have keen interest in reading about new issues and experiences and are much excited about the release of books catering to their taste. Considering the overwhelming response of the readers the publishers too are interested in providing them more information and interesting facts through their books. In this context a few days back, there was a release of 'Osho Fragrance' — by Swami Chaitanya Keerti at India International Centre. This book is published by 'Wisdom Tree.'

'Osho Fragrance', the book was released by the HRD minister Mr Arjun Singh. On this occasion he congratulated Swami Chaitanya Keerti and the publisher 'Wisdom Tree', Mr Shobhit Arya. He also said that Osho's world is a new concept for the Indian readers, and learning more about his thoughts through this book would be a good experience.

Preceding this speech Ms Lavleen Thadani briefed the audiences about Osho. Swami Chaitanya Keerti said that, though we celebrate many festivals and we are quite familiar with all the customs but Osho talks about a different custom altogether, which is more acceptable, and this is the 'teacher-disciple relation'. According to him everybody is attached to this world, but the 'teacher-disciple relation' is one which is not from everybody and has a world of its own. Living and the dead, known and unknown, death and the salvation, and other such issues related to life highlighting the preaching of Osho are included in this book. He says," what ever I am speaking are not just my words, but it is the past and present of all those who follow this relation.

Publisher Shobit Arya said that although this book is like any other ordinary book in stores but 'Osho Fragrance' has a much stronger idea to offer to the readers. It highlights on the different aspects of life. He said that like the other books published by 'Wisdom Tree' this book will also prove to be beneficial for its readers. Wisdom tree is not just a publishing house, it is an institution where publishing is a passion and the whole processes from writing till the publication an art.

On this occasion renowned poet Surendra Sharma was also present who filled the whole atmosphere with laughter and giggles. Apart from HRD minister Mr Arjun Singh, Swami Chaitanya Keerti, Mrs Lavleen Thadani, Shobit Arya, Surendra Sharma; the first secretary of cultural economic affairs, Norway and Embassy Ingrid J Haugh, Sitar maestro Kamal Sabri, Santoor player Abhay Sopori were also present to enrich the

ओशो समवेत ध्यान केंद्र, इंदौर द्वारा पहली बार ओशो मल्टीवर्सिटी प्रयोग आयोजित हुए। शिविर का संचालन मा अमृत साधना द्वारा किया गया। पिछले अगस्त माह में ओशो संस्थान की ओर से 19 से 21 अगस्त तक रविंद्र नाट्य मंदिर, प्रभा देवी में ओशो इवेंट का आयोजन हुआ। वहीं 9 अगस्त के पंजाब केसरी में एक खबर पढ़ने को मिली, जिसमें लिखा है—यूरोप एवं एशिया के विभिन्न देशों में ओशो केंद्र कार्यरत हैं। अब ओशो के नेपाली शिष्य ओशो को पूर्व सोवियत संघ के देशों में लोकप्रिय बनाने की कोशिश कर रहे हैं।' इसी खबर को वीर अर्जुन, हरि भूमि तथा स्वतंत्र भारत आदि समाचार पत्रों ने भी प्रकाशित किया।

स्वामी चैतन्य कीर्ति की पुस्तक 'ओशो फ्रेगरेंस' के विमोचन की खबरें इस माह भी सुर्खियों में रहीं। 8 अगस्त के नेशनल हेराल्ड में लेखक के विचार छपे—हम कई त्यौहार मनाते हैं और इन रिवाज़ों को अपना भी लेते हैं। पर ओशो ने सदा ही एक अलग परंपरा पर बोला है, जो पुरानी परंपराओं से अधिक स्वीकार्य है और यह है गुरु-शिष्य की परंपरा।' इस मौके पर लवलीन थडानी, प्रकाशक शोभित आर्य, श्री सुरेंद्र शर्मा, सारंगी वादक कमाल साबरी, श्री हॉग उपस्थित थे। **4** अगस्त के लोकमत समाचार ने ध्यान स्वास्थ्य शिविर की पूर्व सूचना छापी है। सामाजिक संस्था जैन क्लब द्वारा आयोजित यह स्वास्थ्य शिविर पॉइंट रिज़ॉर्ट में 13 से 15 अगस्त तक चला। समाचार पत्र में लिखा है—यह कार्यक्रम एक प्रकार की फैमिली ग्रुप सायकोथेरेपी है, जो परिवार के लिए आपसी संबंध मधुर बनाने, तनावरहित रखने व युवक-युवती एवं विद्यार्थियों का मानसिक संतुलन बेहतर बनाकर उनके व्यक्तित्व विकास करने का कार्य करेगी।'

'केवल दुखी व्यक्ति ही मंदिर जाता है। प्रसन्न व्यक्ति मंदिर क्यों जाने लगा? प्रसन्न व्यक्ति आनंदित है क्योंकि वह परमात्मा को सर्वत्र पाता है।.. सभी जगह उसके मंदिर हैं। वह जहां झुका, वहीं परमात्मा के चरणों को पाता है—और कुछ नहीं।' 31 अगस्त की सन पत्रिका ने 'सीक एंड यू शैल फाइंड' प्रवचनांश छापा। वहीं दूसरी ओर 26 अगस्त के महामेधा ने 'ज्ञानी जहर को भी बना देता है अमृत' प्रवचन प्रकाशित किया।

ओशो की दृष्टि में कृष्ण एक नया धर्म हैं, एक हंसता हुआ धर्म। वे कृष्ण को एक पूर्ण अवतार की नज़र से देखते हैं। कृष्ण-स्मृति पुस्तक के एक प्रवचन में ओशो ने कहा है कि 'यदि अतीत में कृष्ण को छोड़ दें तो सारा धर्म उदास, आंसुओं से भरा है।..कृष्ण अकेले हैं, जो समग्र जीवन को पूरा ही स्वीकार कर लेते हैं।' इसी प्रवचन को 23 अगस्त के दैनिक जागरण ने प्रकाशित किया है। उधर राजस्थान पत्रिका ने भी जन्माष्टमी के मौके पर एक सुंदर रंगीन पृष्ठ में ओशो का प्रवचन प्रकाशित किया। इसी दिन के हिन्दुस्तान टाइम्स में छपे लेख में स्वामी कीर्ति लिखते हैं—संसार

Audio nirvana

Osho arrives with a twist, 12 brand new CDs hit the stores

LALITHA SUHASINI

SANTOOR, bamboo flutes, guitar and minimal percussion sounds lull you into a state that is meant "to tickle the subtle energies that point towards the mystery of our existence." At least that's what the liner notes promise.

After discourses and speeches, now music from Osho's commune is finding takers. Twelve recently-launched CDs from Music Today include titles such as *Buddha's Enjoying Freedom*, *Hollow Bamboo* and *Five Fingers*, most of which comprise recordings from the Osho international meditation resort, Pune.

"Music has been a part of all of Osho's work and people from over 100 countries come together to create a

People from over 100 countries come together to create Osho music

बुद्धत्व के फूल को कृष्ण, महावीर, जीसस, मोहम्मद, गुरु नानक के रूप में जानता है। वे सभी चेतना के शिखर थे। परंतु उनकी सुगंध समान है और वह सुगंध सभी सीमाओं के परे उन सभी के लिए मौजूद है जो बुद्धत्व को जानना चाहते हैं।...बुद्धत्व सुगंध है उन सभी बुद्धों की, जिन्होंने अपने स्वरूप को पहचाना।'

'मस्तिष्क एक भीड़ के समान है और विचार पृथक हैं...छोड़ो सभी विचारों को और तब कुछ भी शेष नहीं रह जाता। दरअसल मस्तिष्क कुछ है ही नहीं, मात्र विचार ही हैं। परंतु विचार इतनी तेज़ी से चलते हैं कि दो विचारों के मध्य आप विराम नहीं देख पाएंगे। पर विराम वहां सदा ही मौजूद है'—20 अगस्त को एशियन एज ने ओशो के कुछ प्रवचनांश इमोशनल फिटनेस कॉलम के तहत प्रकाशित किये। 'ज्ञान के दायरे', 20 अगस्त के दिव्य हिमाचल में प्रकाशित इस प्रवचन में लिखा है—सृजनात्मकता का अर्थ होता है, नए को घटित होने देना। नया होने देने का मतलब है : स्मृति को दरकिनार कर देना, ताकि अतीत हस्तक्षेप न कर सके।' स्व-विसर्जन—16 अगस्त के दैनिक जागरण में छपे इस प्रवचन में ओशो ने कहा है—जो स्व को परिपूर्ण जानता है, वह स्व के विसर्जन को उपलब्ध हो, सर्व को पा लेता है। स्व के विस्मरण से नहीं, स्व के विजर्सन से सर्व की राह है।'

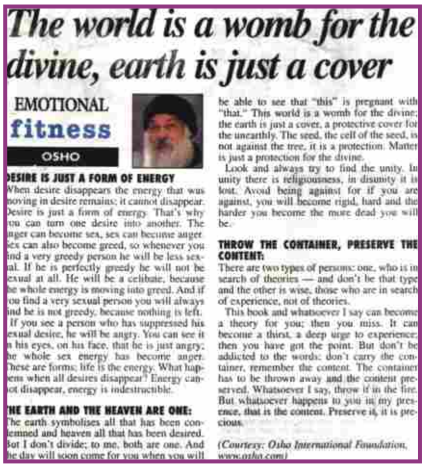

The world is a womb for the divine, earth is just a cover

EMOTIONAL fitness

OSHO

DESIRE IS JUST A FORM OF ENERGY

When desire disappears the energy that was moving in desire remains; it cannot disappear. Desire is just a form of energy. That's why you can turn one desire into another. The anger can become sex, sex can become anger. Sex can also become greed, so whenever you find a very greedy person he will be less sexual. If he is perfectly greedy he will not be sexual at all. He will be a celibate, because the whole energy is moving into greed. And if you find a very sexual person you will always find he is not greedy, because nothing is left.

If you see a person who has suppressed his sexual desire, he will be angry. You can see it in his eyes, on his face, that he is just angry; the whole sex energy has become anger. These are forms; life is the energy. What happens when all desires disappear? Energy cannot disappear, energy is indestructible.

THE EARTH AND THE HEAVEN ARE ONE:

The earth symbolises all that has been condemned and heaven all that has been desired. But I don't divide; to me, both are one. And the day will soon come for you when you will be able to see that "this" is pregnant with "that." This world is a womb for the divine; the earth is just a cover, a protective cover for the unearthly. The seed, the cell of the seed, is not against the tree, it is a protection. Matter is just a protection for the divine.

Look and always try to find the unity. In unity there is religiousness, in disunity it is lost. Avoid being against for if you are against, you will become rigid, hard and the harder you become the more dead you will be.

THROW THE CONTAINER, PRESERVE THE CONTENT:

There are two types of persons: one, who is in search of theories — and don't be that type and the other is wise, those who are in search of experience, not of theories.

This book and whatsoever I say can become a theory for you; then you miss. It can become a thirst, a deep urge to experience; then you have got the point. But don't be addicted to the words; don't carry the container, remember the content. The container has to be thrown away and the content preserved. Whatsoever I say, throw it in the fire. But whatsoever happens to you in my presence, that is the content. Preserve it, it is precious.

(Courtesy: Osho International Foundation, www.osho.com)

दि सीक्रेट ऑफ हैप्पिसनेस—सन पत्रिका में लिखा है—अगर तुम दुखी हो तो तुम महत्वाकांक्षी होओगे, और अगर प्रसन्न हो तो तुम्हारी महत्वाकांक्षाएं समाप्त हो जायेंगी। एक मूर्ख के अलावा और कौन प्रधानमंत्री बनना चाहेगा? सिवाय एक पागल के कौन महिला संसार की सबसे अमीर महिला बनना चाहेगी? तुम प्रसिद्धि को न तो खा सकते हो और न ही उससे प्रेम कर सकते हो। तुम सबसे अधिक प्रसिद्ध तो बन

sort of spontaneous world music," says Osho representative Devendra Bharati. Most of the music has been recorded at the commune.

In fact, one of Osho's many disciples is composer and sitar player Prem Joshua, who has released albums such as *Shiva Moon*. The Germany-born Joshua, who lived in the commune for almost two decades, played live music (including the bamboo flute and the saxophone) almost every day. "I got in contact with Osho in 1977 when I came to India for the first time," says Joshua in an e-mail interview, "I had many teachers for music but only one for silence: Osho."

"Our target audience is not only people who are familiar with the culture," says Gurmeet Singh, business head, Music Today. "It's also those into new age and easy listening genres of music, who'd like to listen to this music to relax after a day's work."

If you've liked the sound of new age and world music, then this new brand of music should also work for you.

Joshua's MTV performance last year

Love Guru draws inspiration from Osho

JYOTHI VENKATESH

Raahul Kapoor, the son of veteran actor Bharat Kapoor, is geared-up about his directorial venture *Love Guru* starring Rocky Sandhu, Tarun Arora, Mona Lisa and Janki. Interestingly, it is the first ever film to have been inspired by Osho Rajneesh's controversial book *Sambhog Se Sambandh Tak*.

Says Raahul, "*Love Guru* is a comedy made under the banner of Evershine Films. The film has been set in the backdrop of a resort. Rocky Sandhu and Tarun Arora are the employees of the resort which is running into losses. There is a sex clinic next to the resort also on the brink of closure. Both the owners insert ads in a newspaper but by mistake their addresses get exchanged which results into a comedy of errors."

Further throwing a light on the theme of the film, he adds, "People with sex problems start visiting the resort. Instead of sorting out the confusion both Tarun and Rocky transform themselves into Love Gurus to solve their sex problems. How these two men solve the sex problems forms the crux of the film."

The film is an adaptation of Osho's book and has been modified as per the needs of the cinema. It sets out to emphasise that one achieves salvation only through sublime love and everything else is futile.

'समाधि सहज ही होगी। असहज जो हो, वह समाधि नहीं है'—12 अगस्त के महामेधा में छपे इस प्रचवचन में ओशो ने परमात्मा में खोने का मार्ग सहज समाधि ही बताया है। कहते हैं—परमात्मा को प्रयास से पाने का कोई भी उपाय नहीं है। उसे तो अप्रयास से ही पाया जा सकता है..इसलिए परमात्मा की खोज वस्तुतः परमात्मा में खोने की व्यवस्था है।'

लव योअर बॉडी—ये शीर्षक है 11 अगस्त को दि आफ्टरनून डिस्पैच एंड कूरियर में छपे प्रवचन का। ओशो ने हमेशा ही उन परंपरों का खंडन किया है जिसमें शरीर को मात्र एक काया मानकर उसे नष्ट करने पर जोर दिया गया। यहां लिखा है—तंत्र पहले यही सिखाता है कि अपने शरीर के प्रति प्रेमपूर्ण बनो, उसके मित्र बनो, उसे सम्मान दो—यह तो एक उपहार है। उसका ध्यान रखो और तुम पाओगे उससे तुम्हारे लिए अनेकों रहस्य उद्घाटित होंगे। विकास इस बात पर निर्भर करता है कि तुम अपने शरीर को किस प्रकार लेते हो।'

06 अगस्त के समाचार जगत में साधना सूत्र पुस्तक का एक बड़ा-सा लेख प्रकाशित हुआ। शीर्षक था 'समग्र जीवन का सम्मान करो...' ओशो कहते हैं समग्र जीवन का सम्मान करो, मृत्यु का नहीं, हिंसा का नहीं, विध्वंस का नहीं, जीवन का, सृजन का, प्रेम का। जहां से जीवन उठता है, जहां से जीवन जन्मता है, जहां से जीवन फैलता है—चाहे पौधों, चाहे पक्षियों, चाहे मनुष्यों में—जीवन का सम्मान करो।' व्यक्तित्व के बंधन जब तक ढीले नहीं होते, तब तक आत्मा का रहस्य खुलना प्रारंभ नहीं होता। व्यक्तित्व की गांठ के भीतर ही आत्मा का रहस्य छिपा है'—दिव्य हिमाचल में 6 अगस्त को यह प्रवचन 'व्यक्तित्व एवं आत्मा' प्रकाशित हुआ।

उड़ीसा के समाचार-पत्रों में भुवनेश्वर में **13** से **15** अगस्त को हुए ओशो ध्यान शिविर की खबरें स्थानीय समाचार-पत्रों में छपी हैं तथा स्वामी चैतन्य कीर्ति के साथ साक्षात्कार।

बेशक, समाचारों का सिलसिला तो यूं ही चलता रहेगा। परंतु प्रेम और आनंद के इस सिलसिले में आप भी सहयोगी बनें। आपके क्षेत्र में यदि कोई ओशो संबंधित कार्यक्रम हों तो आप उसकी सूचना अथवा अखबार की कतरनें हमें फैक्स, ई-मेल या पत्र द्वारा भिजवा सकते हैं। इस यात्रा में आप भी भागीदार बनें, आखिर आनंद तो होता ही बांटने के लिए है।

— स्वामी प्रेम अभिनंदन